Signature of Invigilators

1. ....

2. ....

Roll No. | | | | | |

(In figures as in Admit Card)

HINDI

Paper III

Roll No. ....

....

(In words)

J—0502

Name of Areas/Section (if any) ....

Time Allowed : $2\frac{1}{2}$ Hours]

[Maximum Marks : 200

Instructions for the Candidates

1. Write your Roll number in the space provided on the top of this page.
2. Write name of your Elective/Section if any.
3. Answer to short answer/essay type questions are to be written in the space provided below each question or after the questions in test booklet itself. No additional sheets are to be used.
4. Read instructions given inside carefully.
5. Last page is attached at the end of the test booklet for rough work.
6. If you write your name or put any special mark on any part of the test booklet which may disclose in any way your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. Use of any calculator is prohibited.
8. There is no negative marking.
9. You should return the test booklet to the invigilator at the end of the examination and should not carry any paper outside the examination hall.

પરીક્ષાર્થીઓ માટેની સૂચનાઓ :

આ પાનાની ટોચમાં દર્શાવેલી જગ્યામાં તમારો રોલ નંબર લખો.

જો કોઈ વિકલ્પ/વિભાગ પસંદ કર્યા હોય તો તે યોગ્ય જગ્યાએ દર્શાવો.

ટુંકા પ્રશ્નો/નિબંધ વિષેના જવાબો એ પ્રશ્નની નીચે અગર બાજુમાં આપેલી જગ્યામાં લખો. વધારાના કોઈ પાનાનો ઉપયોગ કરશો નહી.

અંદર આપેલી સૂચનાઓ કાળજીપૂર્વક વાંચો .

ુકલેટની પાછળ આપેલું છેલ્લુ પાનું રફ કામ માટે છે.

ુકલેટ કોઈપણ ઠેકાણે તમારું નામ કે કોઈ ચોકકસ સંજ્ઞા રવી નહીં કે જે તમારી ઓળખ પૂરી પાડે. આ તમને રીક્ષા માટે ગેરલાયક ઠેરવશે.

ક્યુલેટર નો ઉપયોગ કરાશે નહી.

કારાત્મક માર્કીગ નથી.

રીક્ષા સમય પૂરો થઈ ગયા પછી આ બુકલેટ જે તે રીક્ષકને સોંપી દેવી. કોઈપણ પેપર પરીક્ષા રૂમની ાર લઈ જવું નહી.

FOR OFFICE USE ONLY
Marks Obtained

Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
9					
10					
11					

Total Marks Obtained..................................

Signature of the co-ordinator....................
(Evaluation)

HINDI
हिन्दी
Paper—III
प्रश्न-पत्र—III

नोट :— इस प्रश्न-पत्र में दो खण्ड ('अ' एवं 'ब') हैं । **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

खण्ड 'अ'

नोट :— इस खण्ड में **दस** लघु निबंधात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न के **16** अंक हैं, जिनका उत्तर लगभग **तीन-सौ** शब्दों में दीजिए ।

1. 'पद्मावत' में लोक-तत्त्व को विशद कीजिए ।

अथवा

तुलसीदास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए ।

2. बिहारी की कविता के काव्य-सौन्दर्य की विवेचना कीजिए ।

अथवा

भूषण के काव्य में युग-बोध का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

3. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में परंपरा और आधुनिकता के तत्त्वों की चर्चा कीजिए ।

अथवा

छायावादी कविता की मुख्य विशेषताओं का सोदाहरण निर्देश कीजिए ।

4. प्रगतिवाद द्वारा प्रस्तुत कविता के नये आदर्शों की चर्चा कीजिए ।

अथवा

प्रगतिवाद और प्रयोगवाद की काव्य-दृष्टि में क्या अंतर है ? समझाइए ।

5. प्रेमचन्द को युग-प्रवर्त्तक उपन्यासकार कहा गया है । उपन्यास में उनके युग-प्रवर्त्तन की दिशाओं को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

'नई कहानी' के नयेपन पर प्रकाश डालिए ।

6. हिन्दी नाटक को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का क्या प्रदेय है ? इस प्रदेय के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

ललित निबन्धों के स्वरूप और उसकी मूलवर्ती विशेषताओं की चर्चा कीजिए ।

7. भरत के रससूत्र की सांगोपांग व्याख्या कीजिए ।

अथवा

आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी की समीक्षा-दृष्टि पर प्रकाश डालिए ।

8. अरस्तू के विरेचन-सिद्धान्त को समझाइए ।

अथवा

'नई समीक्षा' की मुख्य स्थापनाओं का उल्लेख कीजिए ।

9. संदर्भ सहित निम्नलिखित अवतरण की काव्योपयुक्त व्याख्या कीजिए :

कुहुकि-कुहुकि जस कोइल रोई । रकत-आँसु घुँघुँची बन बोई ।
भइ करमुखी नैन तन राती । को सेराव विरहा दुख ताती ।
जहँ जहँ ठाढ़ि होइ बनवासी । तँह तँह होइ घुँघुचि कै रासी ।
बूँद-बूँद मँह जानहु जीऊ । गुंजा गूँजि करै 'पिउ पीऊ' ।
तेहि दुख भए परास निपाते । लोहू बूड़ि उठे होइ राते ।
राते बिंब भीजि तेहि लोहू । परवर पाक, फाट हिय गोहूँ ।
देखौ जहाँ होइ सोइ राता । जहाँ सो रतन कहै को बाता ।
नहिं पावस ओहि देसरा, नहिं हेवंत बसंत ।
ना कोकिल न पपीहरा, जेहि सुनि आवै कंत ॥

अथवा

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे
तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेंगी हमको
नीली झील की लहरीली थाहें
जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता
अरुण कमल एक
धँसना ही होगा
झील के हिम-शीत सुनील जल में
जादुई झील को करनी ही होगी मेरी प्रतीक्षा ।

10. संदर्भ सहित निम्नलिखित अवतरण की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए :

समीर की गति भी अवरुद्ध है, शरीर का फिर क्या कहना ? किंतु मन में इतने संकल्प और विकल्प ? एक बार निकलने पाता तो दिखा देता कि इन दुर्बल हाथों में साम्राज्य उलटने की शक्ति है..... । जकड़ी हुई लौह शृंखले ! एक बार तू फूलों की माला बन जा और मैं मदोन्मत्त विलासी की भांति तेरी सुंदरता को भंग कर दूँ । क्या रोने लगूँ ? इस निष्ठुर यंत्रणा की कठोरता से बिलबिला कर दया की भिक्षा माँगू ?..... तब.....मैं आज से प्रण करता हूँ कि दया किसी से न माँगूगा और अधिकार तथा अवसर मिलने पर न किसी पर करूँगा ।

अथवा

सौन्दर्य कुछ नहीं है, अगर वह शक्ति नहीं है, प्रेरणा नहीं है । यह उसे समुद्र ने सिखा दिया था, उस आदि-गुरु, आदि-सत्य, आदि-शिव, आदि-सुंदर समुद्र ने । सौन्दर्य वही है, वहाँ संग्राम है, और उसे वही देख सकता है, जिसके भीतर शक्ति है । उस आद्या शक्ति को जिसने एक बार देखा है, उसने अपने को सदा के लिए समर्थ बना लिया है । वह पथभ्रष्ट नहीं हो सकता । वह मर सकता है, पर झुक नहीं सकता । नष्ट हो सकता है, पर कीच में नहीं रेंग सकता ।

खण्ड 'ब'

नोट :— इस खण्ड में केवल एक प्रश्न **40** अंक का है, जिसका उत्तर लगभग **आठ सौ** शब्दों में दीजिए ।

अनुभाग-क

(भक्ति-काव्य)

11. कबीर का रहस्यवाद और उनका अध्यात्म उनके समाज-दर्शन से मेल नहीं खाता । उनमें परस्पर अंतर्विरोध है । इस कथन पर अपना सुविचारित मंतव्य प्रस्तुत कीजिए ।

अथवा

अनुभाग-ख

(छायावाद)

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' छायावादी से अधिक स्वच्छन्दतावादी हैं । स्वच्छन्दतावाद और छायावाद के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उपर्युक्त कथन पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

अनुभाग-ग

(कथा-साहित्य)

'मैला आँचल' को आंचलिक उपन्यास कहा गया है, जबकि ग्राम्य जीवन से संबंधित होते हुए भी 'गोदान' आँचलिक उपन्यास नहीं है । इस कथन के आलोक में 'गोदान' और 'मैला आँचल' की मूलवर्ती रचना-दृष्टि को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

अनुभाग-घ

(काव्यशास्त्र और आलोचना)

'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' — इस उक्ति की सांगोपांग व्याख्या कीजिए ।